5. जनता का जीवन

- जब कोई विदेशी जाति किसी देश को जीत कर उस देश में बस जाती है, तो उसके साथ नए तौर तरीके और जीवन के नए आदर्श भी जुड़ जाते हैं | यह आदर्श पराजित देश की सभ्यता और संस्कृति को प्रभावित करते हैं |
- सल्तनत युग में भारतीय समाज चार प्रमुख वर्गों में विभाजित था-
  (i)**अभिजात वर्ग-** यह शासन करने वालों का वर्ग था और इसके अंतर्गत सुल्तान सरदार, हिन्दू राजा और ज़मींदार होते थे |
  (ii)**पुरोहित वर्ग-** इसमें ब्राह्मण और उलेमा शामिल थे|
  (iii)**नगर निवासी-** कृषक या अन्य वर्ग (व्यापारी, दुकानदार,शिल्पकार) शामिल थे |
  (iv)**व्यापारिक वर्ग-** शाहूकार वर्ग शामिल था|
- सुल्तान इल्तुतमिश ने व्यापार के लिए चांदी के सिक्के 'टंका' जारी किये|

धर्म

- भारत में इस्लाम धर्म के आ जाने के अनेक परिणाम हुए| हिन्दुओं और मुसलमानों ने परस्पर एक-दूसरे के बहुत से धार्मिक विचार अपना लिए| इससे दो प्रकार की धार्मिक विचारधाराएँ एक धार्मिक आंदोलन दूसरी भक्ति आंदोलन बड़ी लोकप्रिय बन गई|

सूफी-

- 11 वीं शताब्दी फारस और अन्य देशों से आकर भारत के विभिन्न भागों में बस गए| सूफियों ने ईश्वर के निकट पहुंचने के लिए प्रेम साधना और भक्ति का उपदेश दिया|
- सूफी संत ईश्वर के सच्चे प्रेम के सामने प्रार्थना, उपवास और पूजा-पाठ को अधिक महत्व नहीं देते थे ईश्वर के प्रेम के महत्व के महत्व के कारण उनका दृष्टिकोण अन्य धर्मों और संप्रदायों के प्रति उदार था और उनका विश्वास था कि ईश्वर के निकट पहुंचने के अनेक मार्ग हो सकते हैं|
- मुइनुद्दीन चिश्ती अपने समय के एक प्रसिद्ध सूफी महात्मा थे | उनका विश्वास था कि, भक्ति-संगीत भी ईश्वर के निकट पहुंचने का एक रास्ता है|
- दूसरे प्रसिद्ध सूफी संत महात्मा बाबा फरीद थे|

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

अन्य सूफी महात्मा- शाह आलम बुखारी गुजरात में, बहाउद्दीन जकरिया मुल्तान में और शेख शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी सिलहट में रहते थे| दिल्ली के पास में निजामुद्दीन औलिया रहते थे जिनको सुल्तान और जनता दोनों का सम्मान प्राप्त था|

भक्ति-आन्दोलन-

- तमिल देश के भक्ति संप्रदाय के चलाने वाले आलवार नयन्नार संतों ने कहानियों और गीतों के द्वारा भक्ति भावना की परंपरा को प्रारंभ किया था|
- नगरों में व्यापारियों और शिल्पकारों तथा गांव में किसानों के बीच यह आन्दोलन बहुत लोकप्रिय हुआ|

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

- इस आंदोलन के समर्थक अधिकांश संत महात्मा ब्राह्मण थे| भक्ति मार्ग के उपदेशकों ने बताया कि मनुष्य और ईश्वर का संबंध प्रेम भाव पर आधारित है|
- चैतन्य एक धर्मोपदेशक थे जिन्होंने बंगाल में धर्म का उपदेश दिया| वे कृष्ण भक्त हो गए और उन्होंने कृष्ण लीला की बहुत से पदों की रचना की|
- ज्ञानेश्वर ने महाराष्ट्र में भक्ति का उपदेश दिया उन्होंने गीता को फिर से मराठी भाषा में लिखा| ताकि जो संस्कृत न पढ़ सके वो आसानी से समझ सके| उनसे अधिक लोकप्रिय नामदेव और कुछ समय पश्चात् तुकाराम हुए|
- नानक एक अन्य धर्मोपदेशक थे, उन्होने सिख धर्म की स्थापना की| उनके अनुआयी आगे चलकर अपने को खालसा कहने लगे| 17वीं शताब्दी में खालसा लोगों का एक शक्तिशाली सैनिक दल बन गया| तब सिक्खों ने अपने को अन्य लोगों से इन पांच विशेषताओं के द्वारा अलग कर लिया-केश, कंघा, कड़ा, कृपाण और कच्छा ये विशेषताएं सामान्य रूप से पंच ककार या पांच कक्के कहलाती है |

भाषा और साहित्य

- सारे देश के भक्त संतों ने क्षेत्रीय भाषाओं में उपदेश दिए जिससे कि साधारण लोग भी उनके उपदेशों को समझ सके जो भाषाएँ बोली जाती थी वे हमारी वर्तमान भारतीय भाषाओँ से बहुत मिलती-जुलती थीं|
- वास्तव में इन आरंभिक रूपों से ही हमारी वर्तमान भाषाओँ का विकास हुआ| हिंदी के दो रूपों- ब्रज और अवधी का प्रयोग किया जाता था| उत्तर में पंजाबी, पश्चिम में गुजराती, पूर्व में बांग्ला, उत्तर पश्चिमी दक्षिण में मराठी, मैसूर के आसपास के क्षेत्र में कन्नड़ और आंध्र प्रदेश में तेलुगू भाषाओं का विकास हो रहा था|

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

- इसी समय के आसपास उड़ीसा में उड़िया, असम में असमिया, सिंध में सिंधी, और केरल में मलयालम भाषाओं का विकास आरंभ हुआ|
- इसी समय भारतीय भाषाओं पर फारसी का प्रभाव पड़ा और फारसी के बहुत से शब्द भारतीय भाषाओं में आ गए| हिंदी और फारसी के सम्मिश्रण से एक नई भाषा उर्दू बनी वाली| 'उर्दू' का शाब्दिक अर्थ है शिविर|
- तेलुगू के कवि श्रीनाथ में शिव के सम्मान में 'हरविलास' जैसी अनेक कविताओं की रचना की| साथ ही मलिक मुहम्मद जायसी ने हिंदी भाषा में पद्मावत नाम का प्रसिद्ध महाकाव्य लिखा|

वास्तुकला

- फारस और मध्य एशिया से तुर्क और अफगान अपने साथ वास्तुकला के नई शैलियां और तकनीक भी लाये| इन शैलियों का प्राचीन भारतीय शैलियों से सम्मिश्रण हुआ और वास्तुकला के नवीन रूपों का विकास हुआ|
- इस काल की वास्तुकला की दो महत्वपूर्ण विशेषताएं नुकीले महराब और गुम्बद थे|
- ऊंची सकरी मीनारों का निर्माण इस काल की दूसरी शैली थी, जिसका प्रयोग इमारतों के निर्माण में किया गया था| इन इमारतों का रूप और आकार फारस और मध्य एशिया की इमारतों से मिलता जुलता था किंतु उनकी सजावट भारतीय थी|
- मामलुक सुल्तानों के शासनकाल में बनी दिल्ली की कुतुबमीनार तथा उसके निकट की मस्जिद इन इमारतों में से सबसे पहले की है|
- कश्मीर भवन निर्माण में मध्य एशिया की शैली अपनाई गई और बहां लकड़ी की इमारते बनाई गई| इसी तरह गुलबर्गा की जामा मस्जिद और बीदर का मदरसा फारस की शैली में बनाए गए|
- बीजापुर का गोल गुम्मद और बीजापुर के बादशाहों में से एक का मकबरा इन इमारतों में संभवत सबसे प्रसिद्ध इमारतें हैं| कहा जाता है कि इस इमारत का गुंबद संसार के सबसे बड़े गुम्बदों में से एक है| दक्षिण के शासक अपने किले के अंदर भी शानदार इमारतें बनवाते थे| दौलताबाद और गोलकुंडा के किले इसके उदाहरण है|

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

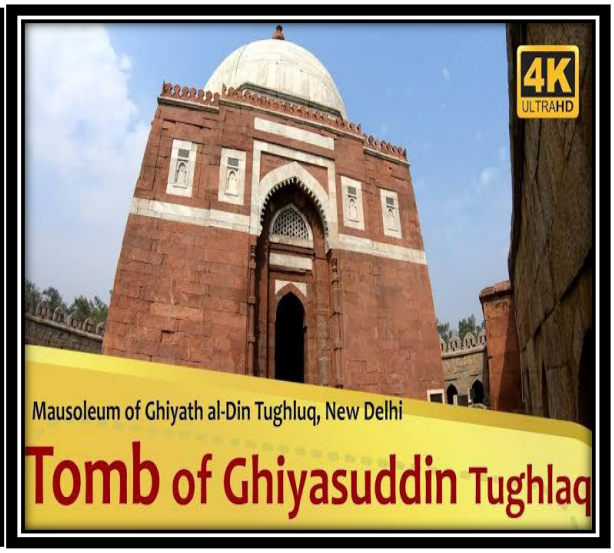

चित्रकला और संगीत

- फारस और अरब की संगीत शैलियों का प्रभाव उस काल में विकसित होने वाले भारत के संगीत पर पड़ा| सितार, सारंगी और तबला जैसे वाद्य यन्त्र इस समय बड़े लोकप्रिय हो गये|

gradeup

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now